गुप्तों की धार्मिक दशा

26th lecture by
Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA
02-05-2020.

Scanned with CamScanner

Page No (1)

गुप्तों की धार्मिक दशा

हिन्दू धर्म :-

26th lecture

→ गुप्तकाल ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान का काल माना जाता है। अनेक गुप्त शासकों ने अश्वमेध, अग्निष्टोम, वाजपेय, वाजसनेय आदि यज्ञ किये। इस काल में हिन्दू धर्म के तीन महत्वपूर्ण पक्ष विकसित हुए -

(a) मूर्ति उपासना का केन्द्रबिन्दु गई।
(b) यज्ञ का स्थान उपासना ने ले लिया तथा
(c) वैष्णव तथा शैव धर्मों का समन्वय हुआ।

हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान की प्रक्रिया गुप्त साम्राज्य की स्थापना से पूर्व आरंभ हो गई थी और गुप्त काल में विकास का यह क्रम अपनी चरम सीमा पर था। हिन्दू धर्म के दो प्रमुख सम्प्रदाय विकसित हुए वैष्णव तथा शैव।

वैष्णव धर्म :- गुप्त राजाओं के राजाश्रय से वैष्णव धर्म लोकप्रियता की चरम सीमा पर पहुँच गया। चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समान अनेक गुप्त सम्राटों ने अपने सिक्कों पर नाम के साथ परम भागवत विशेषण का प्रयोग किया है।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा समुद्रगुप्त के सिक्कों पर विष्णु के वाहन गरुण की प्रतिमा अंकित है। गरुण मुद्रा का उदाहरण गाजीपुर जिले के भितरी नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। भगवद्गीता में वैष्णव धर्म का प्रतिपादन किया गया है इसमें अवतारवाद का उपदेश है। स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख तथा बुद्धगुप्त का एरण स्तम्भलेख विष्णु की स्तुति से प्रारंभ होता है।

- गुप्तकाल में वैष्णव धर्म संबंधी सबसे महत्वपूर्ण अवशे देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर है। इसका पूर्व नाम केशवपुर था

Scanned with CamScanner

बौद्ध धर्म

→ फाह्यान के वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि गुप्तकाल में बौद्ध धर्म अपने स्वाभाविक रूप से विकसित हो रहा था। उसके अनुसार गुप्त काल में कश्मीर, अफगानिस्तान और पंजाब बौद्ध धर्म के केन्द्र थे।

→ गुप्त काल में नालंदा में प्रसिद्ध बौद्ध विहार की स्थापना हुई थी। ह्वेनसांग के अनुसार 100 ग्राम तथा इत्सिंग के अनुसार 200 ग्रामों का राजस्व इसे प्राप्त होता था। गुप्तकाल में अनेक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्यों का आविर्भाव हुआ। उनमें अनेक प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक महायान शाखा के समर्थक थे। जैसे- आर्यदेव, असंग, वसुबन्धु मैत्रेयनाथ और दिङ्नाग आदि।

जैन धर्म :-

फाह्यान ने जैन धर्म का उल्लेख नहीं किया है परन्तु मध्यवर्ग एवं व्यापारियों में धर्मों का पर्याप्त प्रचार था। उत्तर भारत में जैन धर्म को राजकीय समर्थन नहीं मिला परंतु कदम्ब एवं गंग राजाओं ने इसे आश्रय प्रदान किया। कहौम के लेखक के अनुसार स्कन्दगुप्त के काल में भद्र नामक एक व्यक्ति ने पांच जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों की स्थापना करवाई थी।

Scanned with CamScanner

यह मंदिर पंचायत शैली का है। इस मंदिर में शेषनाग की शैया पर विश्राम करते हुए नारायण विष्णु को दिखाया गया है।

→ गुप्तकाल में नारायण, संकर्षण, लक्ष्मी जैसे अवैदिक देवी-देवताओं को वैष्णव धर्म का अभिन्न अंग बना लिया गया।

शैव धर्म :-

→ गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी थे किन्तु उनकी धार्मिक सहिष्णुता की भावना से शैव धर्म के अनुयायी वर्ग का समाज में यथोचित प्रसार हुआ। गुप्त काल में अनेक शैव मंदिरों का निर्माण हुआ। शिव की मूर्तियां दो प्रकार से बनायी जाती थी :—
(a) मानव आकार में तथा
(b) लिंग के रूप में

→ शिव एवं पार्वती की संयुक्त मूर्तियाँ इसी काल में बननी शुरू हुई। त्रिमूर्ति के अंतर्गत गुप्तकाल में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा आरंभ हुई। समन्वय की उदार भावना गुप्त काल की विशेषता थी। गुप्त काल में शैव धर्म के अनेक सम्प्रदायों का विकास हुआ। वामन पुराण में इनकी संख्या चार है —
(a) शैव (b) पाशुपति (c) कापालिक और
(d) कालामुख।

→ स्कन्दगुप्त के बैल के आकार वाले सिक्के उसकी शैव धर्म में आस्था के प्रमाण है। कुमारगुप्त प्रथम के सिक्कों पर मयूर पर आरूढ कार्तिकेय की प्रतिमा अंकित है। इसके काल में बुद्ध, सूर्य, शिव आदि की उपासना को समान रूप से राज्य की ओर से प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

Scanned with CamScanner